दोहा

“मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

जा तन की झाँई परै, स्याम हरित-द्युति होइ॥”

अब इसकी पंक्ति-दर-पंक्ति विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत है–

प्रसंग

यह दोहा मंगलाचरण के रूप में है। कवि बिहारीलाल जी यहाँ राधा जी से प्रार्थना कर रहे हैं कि वे उनकी संसारिक बाधाओं को दूर करें। यह भक्ति और श्रृंगार का सुंदर समन्वय है।

पहली पंक्ति :

“मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।”

शब्दार्थ :

- मेरी – मेरी (कवि की)
- भव-बाधा – संसार की बाधाएँ, जन्म-मरण के दुःख, सांसारिक कष्ट
- हरौ – हर लो, दूर करो
- राधा नागरि – रसिकों की स्वामिनी राधा
- सोइ – वही (आप ही)

व्याख्या :

कवि विनम्र भाव से राधा जी से प्रार्थना करते हैं–हे राधा! आप ही मेरी संसार रूपी दुःखों और बाधाओं को दूर कीजिए।

'भव-बाधा' से तात्पर्य है संसार के दुख, मोह, चिंता और जन्म-मरण का कष्ट। कवि मानते हैं कि इन कष्टों को दूर करने की शक्ति केवल राधा जी में है।

यहाँ कवि की भक्ति-भावना व्यक्त होती है।

दूसरी पंक्ति :

"जा तन की झाँई परै, स्याम हरित-द्युति होइ॥"

शब्दार्थ :

- जा तन की – जिनके शरीर की
- झाँई परै – छाया पड़ती है
- स्याम – श्रीकृष्ण (श्याम वर्ण वाले)
- हरित-द्युति – हरी आभा, हरित कांति
- होइ – हो जाती है

व्याख्या :

कवि कहते हैं–हे राधा! आपके शरीर की मात्र छाया पड़ जाने से ही श्याम (कृष्ण) की कांति भी हरी-सी हो जाती है।

अर्थात राधा जी की आभा इतनी प्रभावशाली और दिव्य है कि उनके स्पर्श या छाया से स्वयं श्रीकृष्ण का रंग भी परिवर्तित होकर नवीन शोभा धारण कर लेता है।

यहाँ राधा जी की महिमा और श्रेष्ठता का अत्यंत सुंदर चित्रण है।

विस्तृत भावार्थ

इस दोहे में बिहारी जी ने भक्ति और श्रृंगार का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया है।

- पहली पंक्ति में वे राधा जी से अपनी सांसारिक बाधाओं को दूर करने की प्रार्थना करते हैं।
- दूसरी पंक्ति में राधा की दिव्य शक्ति और प्रभाव का वर्णन करते हुए बताते हैं कि उनकी छाया मात्र से कृष्ण की कांति बदल जाती है।

यहाँ राधा को कृष्ण से भी श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो रीतिकालीन काव्य की विशेषता है।

काव्य-सौंदर्य

1. रस – मुख्यतः भक्ति रस एवं श्रृंगार रस
2. अलंकार —

अतिशयोक्ति (राधा की छाया से कृष्ण का रंग बदलना)

रूपक एवं अनुप्रास

3. भाषा – ब्रजभाषा
4. छंद – दोहा

दोहा :

“हौं रीझी, लखि रीझिहैं छबिलैं छबिलैं लाल।

सोनजुही सी होति दुति-मिलत मालती माल॥”

अब इसकी पंक्ति-दर-पंक्ति विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत है –

प्रसंग

यहाँ सखी नायिका के रूप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए नायक (लाल/श्याम) को आकर्षित कर रही है। यह श्रृंगार रस का सुंदर उदाहरण है।

पहली पंक्ति

“हौं रीझी, लखि रीझिहैं छबिलैं छबिलैं लाल।”

शब्दार्थ

- हौं रीझी – मैं तो मोहित हो गई हूँ।
- लखि – देखकर।
- रीझिहैं – मोहित हो जाएँगे।
- छबिलैं लाल – सुन्दर, रूपवान प्रियतम (श्याम/नायक)।

व्याख्या

सखी कहती है–मैं तो इस सुन्दरी को देखकर पहले ही मोहित हो चुकी हूँ। हे सुन्दर प्रियतम! आप भी जब इसे देखेंगे तो अवश्य ही इसके रूप पर रीझ जाएँगे।

यहाँ सखी नायक के मन में नायिका के प्रति आकर्षण उत्पन्न कर रही है।

दूसरी पंक्ति

“सोनजुही सी होति दुति-मिलत मालती माल॥”

शब्दार्थ

- सोनजुही – पीले रंग का सुन्दर पुष्प।
- दुति – कांति, आभा।
- मिलत – मिल जाने पर।
- मालती माल – मालती के श्वेत पुष्पों की माला।

व्याख्या

नायिका के शरीर की सुनहरी आभा जब उसकी मालती (सफेद फूलों) की माला से मिलती है, तो वह माला भी सोनजुही के फूल जैसी पीली और आकर्षक प्रतीत होने लगती है।

अर्थात नायिका की देह की कांति इतनी प्रभावशाली है कि उसके संपर्क से श्वेत माला भी सुनहरी दिखने लगती है।

विस्तृत भावार्थ

इस दोहे में बिहारी ने नायिका की देह-यष्टि और उसकी कांति का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है।

- पहली पंक्ति में सखी स्वयं मोहित होकर नायक से कहती है कि तुम भी इसे देखकर मोहित हो जाओगे।
- दूसरी पंक्ति में नायिका की कांति की प्रभावशीलता का चित्रण है–उसकी सुनहरी आभा मालती की माला को भी सोनजुही जैसा बना देती है।

यहाँ कवि ने कम शब्दों में गहन सौंदर्य का चित्र उपस्थित किया है, जो बिहारी की काव्य-कला की विशेषता है।

काव्य-सौंदर्य

- रस – श्रृंगार रस (संयोग)
- अलंकार – उपमा अलंकार (सोनजुही की उपमा), अतिशयोक्ति
- भाषा – ब्रजभाषा
- छंद – दोहा